सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 7 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी.–7/बी.एच.डी.ई.–107
सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.डी.–7/बी.एच.डी.ई.–107/टी.एम.ए./2017-18
कुल अंक : 100

भाग 'क'

1. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए :** 4×12=48

(क) भाषा व्यवस्था की संकल्पना पर प्रकाश डालिए।
(ख) व्यंजन ध्वनियों की उच्चारणात्मक विशेषताएँ बताइए।
(ग) हिंदी के स्वर स्वनिमों के उच्चरित रूप पर प्रकाश डालिए।
(घ) शब्द और पारिभाषिक शब्द में अंतर बताते हुए पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
(ड.) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।
(च) लिपि के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन कीजिए।
(छ) वर्तनी संबंधी भूलों के सामान्य कारणों को रेखांकित कीजिए।

भाग 'ख'

2. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन पर प्रकाश डालिए :** 3×4=12

(क) हिंदी की साहित्यक शैलियाँ
(ख) भाषा की समाज सांस्कृतिक इकाइयाँ
(ग) वाच्य संरचना के प्रकार
(घ) प्रत्यय
(ङ) लोकोक्ति का आशय

3. **निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर 150–150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए :** 5×4=20

(क) नासिक्य व्यंजन
(ख) विपरीतार्थक शब्द
(ग) बलाघात
(ङ) वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग
(च) अ-लोप
(छ) अनुस्वार का मानकीकरण

4. मिश्र वाक्य की संकल्पना स्पष्ट करते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए। 20

अथवा

प्रोक्ति से आप क्या समझते/समझती हैं? इसके अभिलक्षणों का परिचय दीजिए।

ASSIGNMENT SOLUTIONS GUIDE (2017-2018)

B.H.D.E.-107

हिन्दी संरचना

Disclaimer/Special Note: These are just the sample of the Answers/Solutions to some of the Questions given in the Assignments. These Sample Answers/Solutions are prepared by Private Teacher/Tutors/Authors for the help and guidance of the student to get an idea of how he/she can answer the Questions given the Assignments. We do not claim 100% accuracy of these sample answers as these are based on the knowledge and capability of Private Teacher/Tutor. Sample answers may be seen as the Guide/Help for the reference to prepare the answers of the Questions given in the assignment. As these solutions and answers are prepared by the private teacher/tutor so the chances of error or mistake cannot be denied. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing these Sample Answers/ Solutions. Please consult your own Teacher/Tutor before you prepare a Particular Answer and for up-to-date and exact information, data and solution. Student should must read and refer the official study material provided by the university.

भाग 'क'

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए–

(क) भाषा व्यवस्था की संकल्पना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–भाषा-व्यवस्था की संकल्पना– भाषा को हमेशा एक व्यवस्था के रूप में देखने का प्रयास किया गया है। भाषा विज्ञान के जनक **सस्यूर** ने भी भाषा-व्यवस्था की संकल्पना पूर्णत: प्रतिपादित की थी। भाषा की इकाइयों का वह संगठन, जिसके द्वारा भाषा का व्याकरण रूप बनता है, उसे 'व्यवस्था' का नाम दिया गया है। सस्यूर ने दो संकल्पनाओं के माध्यम से भाषा को समझाने का प्रयास किया है–पहला भाषा व्यवस्था तथा दूसरा भाषा व्यवहार। भाषा व्यवस्था का रूप नियमबद्ध मानक और आदर्श होता है। इसी रूप का प्रजनित विकल्पन भाषा व्यवहार (लॉग) होता है, जिसका अभिपालन भाषा प्रयोग की आदर्श स्थितियों में किया जाता है। भाषा व्यवहार (लॉग) इसी प्रकार की एक व्यवस्था में बंधी होती है।

भाषा व्यवहार (पारोल) अनेक रूपों में होता है। हम अपनी क्षेत्रीयता, सामाजिक वर्ग-भेद और शिक्षा में बँधकर ही भाषा व्यवहार का प्रयोग करते हैं। जैसे–पत्र-पत्रिकाओं में, औपचारिक वार्तालाप में, पुस्तकों में इसी हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। लॉग (भाषा व्यवस्था) कुछ निश्चित क्षेत्रों में अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। भाषा का व्यावहारिक रूप पारोल कहलाता है। जितना एक विशेष संदर्भ और परिस्थिति में संप्रेषण को सम्पन्न करने की अभिलाषा को महत्त्व दिया जाता है, उतना भाषा की मानकता को महत्त्व नहीं दिया जाता। भाषा के दोनों रूप प्रत्येक भाषा समुदाय में होते हैं। भाषा व्यवहार से संबंधित भाषा रूपों का प्रयोग अनौपचारिक परिस्थिति के संदर्भ में किया जाता है, जबकि भाषा व्यवस्था में बंधे भाषा रूप का प्रयोग औपचारिक परिस्थितियों में किया जाता है। समाज के सदस्यों के पास अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा के अनेकों रूप होते हैं, जिससे वह अपनी किसी बात को किसी के भी सामने प्रकट कर सके; जैसे–बुजुर्गों के साथ किसी और भाषा का प्रयोग, मित्रों के साथ किसी और प्रकार की भाषा का प्रयोग, अपने भाई-बहनों के साथ किसी अन्य प्रकार की भाषा का प्रयोग आदि।

भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार इन दोनों का प्रयोग समयानुसार और आवश्यकतानुसार करना होता है। मानव मस्तिष्क में किसी भी प्रकार की भाषा को ग्रहण करने की अतुलनीय क्षमता होती है। हमारा मस्तिष्क किस समय, कहाँ, कब, किससे, किस भाषा का प्रयोग करना है, सहजता से निर्णय कर लेता है। भाषा-भण्डार ही मनुष्य मस्तिष्क की अद्‌भुत क्षमता है। भाषा-विज्ञान के चिन्तक **चामस्की** ने भी व्यवस्था को भाषा का आदर्श माना है।

अत: स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रचनात्मक इकाइयाँ पूर्ण रूप से व्याकरण के नियमों से आबद्ध होती हैं, इसलिए आधुनिक भाषा को संरचनात्मक इकाइयों के माध्यम से दो भागों में विभक्त करने का प्रयास किया गया है–

1. व्यवस्था के आधार पर

(i) मानक भाषा;

(ii) व्याकरणसम्मत भाषा;

(iii) औपचारिक भाषा तथा

(iv) परिनिष्ठित भाषा

2. व्यवहार के आधार पर

(i) सामाजिक शैली;

(ii) क्षेत्रीय शैली;

(iii) प्रयोजनमूलक शैली और

(iii) मिश्रित शैली

भाषा संरचना की इकाइयों के अभाव में किसी भी प्रकार की भाषा का ज्ञान प्राप्त करना असंभव होता है, जिसके फलस्वरूप हम भाषा के आदर्श रूप से वंचित रह जाते हैं। गांव और कस्बों में रहने वाले अपने वार्तालाप में मानक हिन्दी का प्रयोग नहीं कर पाते हैं, वे लोग अपनी ही भाषा का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करने का कारण उनका अशिक्षित होना है। इस प्रकार के लोग हिन्दी के औपचारिक रूप यानि उसके लिखित रूप से भी वंचित रहते हैं। समाज में ऐसे बहुत ही कम लोग हैं, जो भाषा के आदर्श रूपों से परिचित हों। हिन्दी का मानक रूप भाषा के विकास का विस्तार करने में काफी सहायता प्रदान करता है। भाषा के विकास का प्रमाण उसकी लिखित सामग्री होती है। किसी भी प्रकार की भाषा के विकास का मापदण्ड उसका व्याकरण उपलब्ध होना है। मानक रूप में व्याकरणसम्मत भाषा को उसका वास्तविक रूप माना जाता है, जिसका प्रयोग लेखन और औपचारिक संदर्भों में किया जाता है। ये सभी संरचनात्मक इकाइयाँ होती हैं। भाषा समुदाय के सभी सदस्य भाषा के विविध रूपों का प्रयोग करना जानते हैं। हमारे जीवन में भाषा व्यवहार का काफी महत्त्व होता है। ऐसे लोगों (सदस्यों) की संख्या काफी कम होती है, जो भाषा व्यवस्था पर पर्याप्त अधिकार रखते हैं। इसके पश्चात भी मानक भाषा का प्रयोग व्याकरण में अभीष्ट माना जाता है; जैसे–पाठ्य-पुस्तकों का माध्यम, साहित्य लेखन आदि। मानक भाषा की सम्पूर्ण जानकारी अर्जित करके हम औपचारिक भाषा व्यवहार को और भी ज्यादा प्रभावशाली समर्थ बना सकते हैं।

(ख) व्यंजन ध्वनियों की उच्चारणात्मक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– व्यंजन ध्वनियाँ : उच्चारण विशेषताएँ

श्वास के वायुमार्ग में व्यंजनों का उच्चारण करने में जो अवरोध उत्पन्न होता है; उन्हें इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है–

1. जिस ढंग से उच्चारण होता है, उसे उच्चारण विधि कहा जाता है।

2. स्वर यंत्र में कंपन के अभाव अथवा विद्यमानता से स्वर वायु मुखयंत्र में प्रवेश करती है तथा जब कभी किसी भी प्रकार का अवरोध उत्पन्न होता है, तब श्वास वायु किसी अन्य मार्ग से आती है; जैसे–कभी नाक से, कभी जिह्वा के केन्द्र से और कभी जिह्वा के पार्श्व से।

3. जहाँ पर बिन्दु की स्थिति अवरोध उत्पन्न करती है, उसे उच्चारण बिन्दु कहा जाता है।

4. जिन व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण करने में मार्ग क्षणभर के लिए बिल्कुल बंद हो जाता है, वे स्फोट या स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। व्यंजन ध्वनियों का सबसे महत्त्वपूर्ण यही वर्ग है। शेष व्यंजनों अर्थात इनकी ध्वनियों को सप्रवाह व्यंजन ध्वनि कहते हैं।

5. जो ध्वनियाँ वेग के साथ निकलती हैं, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं और जो ध्वनियाँ शेष रह जाती हैं, उन सभी ध्वनियों को अल्प प्राण व्यंजन ध्वनियाँ कहा जाता है।

1. महाप्राण

महाप्राण ध्वनि की विशेषता है। किसी भी ध्वनि को महाप्राण कहा जाए या नहीं, इस बात का परीक्षण बड़ी सहजता से किया जा सकता है। कोई भी महाप्राण ध्वनि हाथ की हथेली मुख के आगे रखकर हवा निकालिए; जैसे–'ध'। इसके पश्चात ऐसा महसूस होता है कि मुख की हवा हथेली पर आकर लग रही है, लेकिन यदि कोई अल्पप्राण ध्वनि जैसे 'ब' निकालते हैं, तो वायु के स्पर्श का किसी भी प्रकार का कोई भी आभास नहीं होगा।

2. सघोष

सघोष ध्वनि वह होती है, जब हम किसी ध्वनि को निकालते हैं और स्वर यंत्र में कंपन महसूस होती है। अघोष ध्वनि उसे कहते हैं, जिसमें किसी भी प्रकार का कोई भी कंपन नहीं होता।

3. स्फोटक

स्फोटक व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में तीन प्रकार की स्थितियां दिखाई देती हैं।

1. वायु का आगमन

2. अवरोध

3. उन्मोचन

इसमें आरम्भिक स्थितियाँ सभी स्फोटकों में समानता लिए हुए होती हैं। तीसरी अवस्था अर्थात उन्मोचन अनेक प्रकार का हो सकता है। हिन्दी में विस्फोटक व्यंजन ध्वनियां सामान्यत: 25 होती हैं। इन सभी ध्वनियों को पांच वर्गों में विभक्त किया गया है। वाक् यंत्र के एक विशिष्ट क्षेत्र प्रत्येक पंचक की व्यंजन ध्वनियाँ संबद्ध होती हैं। सभी में दो अघोष, दो सघोष और एक नासिक्य व्यंजन ध्वनि होती है।

***(i)* कंठ्य/पंचक कोमल तालव्य पंचक ध्वनियाँ**–जिह्वा का स्पर्श इस पंचक के उच्चारण में कोमल तालु से होता है। निम्न प्रकार से पाँचों व्यंजन ध्वनियों में उच्चारण किया जाता है–

अघोष अल्प प्राण	क	(कबूतर, कसरत)
महाप्राण	ख	(खटमल, खरगोश)
सघोष अल्पप्राण	ग	(गधा, गगन)
महाप्राण	घ	(घर, घरौंदा)
नासिक्य	ङ	(गंगा, पंचक)

नासिक्य के अतिरिक्त जो चारों ध्वनियां हैं, वे व्यंजन ध्वनियों का अपूर्ण रूप हैं। स्फोटक व्यंजन ध्वनि के उच्चारण में तीन प्रकार की स्थितियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं और इस प्रकार से व्यंजन ध्वनि को स्वर रहित ध्वनि उस समय कह सकते हैं, जब तक तीसरी स्थिति प्रकट नहीं होती।

जब व्यंजन ध्वनि के तुरंत बाद कोई दूसरी व्यंजन ध्वनि आ जाती है, तो शुद्ध व्यंजन ध्वनि की स्थिति उत्पन्न होती है। इस प्रकार की स्थिति में मुख यंत्र की प्रथम ध्वनि पूर्ण होने से पहले ही दूसरी ध्वनि के लिए तैयार होना पड़ता है। उदाहरण के लिए–

चक्र, शुक्ल, मुक्त में	क	ध्वनि अपूर्ण है।
ख्याति में	ख	ध्वनि अपूर्ण है।
ग्लानि, मग्न में	ग	ध्वनि अपूर्ण है।
व्याघ्र में	घ	ध्वनि अपूर्ण है।

जब ध्वनि किसी शब्द के किसी अन्त में आती है, तब अल्पप्राण अपूर्ण होता है। जैसे–'वाक्' शब्द में 'क' की ध्वनि अपूर्ण है।

***(ii)* वर्त्स्य-तालव्य पंचक**–इस प्रकार की पंचक ध्वनियों में जो तालु को स्पर्श तो करती है, किन्तु उन्मोचन शीघ्रता से नहीं हो पाता। यह क्रिया धीरे-धीरे ही होती है। इसे स्पर्श-संघर्षी पंचक ध्वनि के नाम से जाना जाता है। उदाहरण के लिए–

अघोष अल्पप्राण	च	(चमेली)
अघोष महाप्राण	छ	(छलनी)
सघोष अल्पप्राण	ज	(जलेबी)
सघोष महाप्राण	झ	(झमाझम)
नासिक्य	पं	(पंथ)
अपूर्ण ध्वनि		वज्र में ज की ध्वनि
		च्यवन में च की ध्वनि
		उच्छवास में च की ध्वनि

***(iii)* मूर्धन्य पंचक**–इसके अन्तर्गत जो भी व्यंजन ध्वनियाँ आती हैं, वे सभी जीभ मूर्धा का स्पर्श करती हैं। मूर्धन्य पंचक में व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण निम्न प्रकार से होता है–

अघोष अल्पप्राण	ट	(टक्कर)
अघोष महाप्राण	ठ	(ठकठक)
सघोष अल्पप्राण	ड	(डगर)
सघोष महाप्राण	ढ	(ढपली)
नासिक्य	–	
अपूर्ण ध्वनियां	ट्	(इकट्ठा)
	ठ्	(पाठ्य)
	ड्	(गड्डी–रुपयों की)
	ढ्	(धनाढ्य)

***(iv)* दंत्य पंचक**–जीभ द्वारा दाँतों की ऊपरी पंक्ति को स्पर्श करते हुये व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण किया जाता है।

अघोष अल्पप्राण	त	(तरक्की)
अघोष महाप्राण	थ	(थरमस)
सघोष अल्पप्राण	द	(दस्तक)
सघोष महाप्राण	ध	(धन्यवाद)
नासिक्य	न	(नमस्कार)
अपूर्ण ध्वनियाँ	त्	(तत्काल)
	थ्	(पथ्य)
	द्	(द्वार)
	ध	(ध्वनि)

***(v)* द्व्योष्ठ पंचक**–दोनों ओष्ठ मिलकर व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण की वायु को रोक लेते हैं। उदाहरण के लिए–

अघोष अल्पप्राण	प	(पतंग)
अघोष महाप्राण	फ	(फल)
सघोष अल्पप्राण	ब	(बगावत)
सघोष महाप्राण	भ	(भरोसा)
नासिक्य	म	(ममत्व)
अपूर्ण ध्वनियाँ	प्	(प्याला)
	फ	(कॉर्नफ्लोर)
	ब	(गब्बर)
	म	(अभ्यास)

(ड.) पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

उत्तर– पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली निर्माण के सिद्धान्त ज्ञात होने के पश्चात शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया के प्रति जिज्ञासा होना स्वाभाविक है। शब्द ग्रहण की प्रक्रिया को बँधा नहीं मानना चाहिये। अर्थात जिन शब्दों के लिए हिंदी या दूसरी भारतीय भाषाओं में पर्यायों का प्रयोग उचित है, जैसे–Hour का समकक्ष 'घंटा' शब्द उपस्थित है, तो उसे स्वीकृत किया गया, जबकि 'मिनट' और 'सेकण्ड' शब्द ग्रहण किये गए हैं। जो संकल्पनाएँ नवीन हैं, उनके लिए शब्दों की ग्रहण पद्धति के अतिरिक्त नवीन शब्द भी बनाए जाते हैं, जिसमें अनुवाद की सहायता भी ली जाती है। इन शब्दों के निर्माण में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाती है–

अंगीकृत, अनुकूलन, नवनिर्माण, अनुवाद

अंगीकृत

वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण आयोग ने पारिभाषिक शब्दावली बनाते समय बहुतायत मे अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को चुना है। रासायानिक तत्त्वों और यौगिक या रेडिकलों के नामों, व्यक्तियों के नामों पर आधारित शब्दों (वोल्टमीटर), द्विपद नामावली (सराका इंडिका) आदि का समावेश किया गया है। भारतीय भाषाओं में रचे-बसे शब्दों, जैसे–इंजन, रेडार, रेडियो, मोटर आदि को भी अंगीकृत किया गया है।

अनुकूलन

जब किसी भाषा में विदेशी भाषा के शब्द को अपनाकर उसे उस भाषा का शब्द मानकर उपयोग किया जाता है, तो उसे अनुकूलन कहते हैं। विदेशी शब्द में हिंदी प्रत्यय लगाकर संकर शब्द बनाए जाते हैं, जैसे–वोल्टता शब्द में 'वोल्ट' के साथ 'ता' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

नवनिर्माण

भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दों के पर्याप्त पर्याय उपलब्ध न हों और जिन्हें अपनाया भी न जा सके, उनके लिए पर्यायों के नवनिर्माण को स्वीकारा गया है। ऐसे नवीन शब्दों को बनाने के लिए संस्कृत धातु में उपसर्ग और प्रत्यय लगाए जाते हैं। अर्थ की दृष्टि से इस पद्धति में निकट अंग्रेजी शब्दों के लिए भिन्न-भिन्न हिंदी पर्याय निश्चित किये गए हैं, जैसे-

Maintenance – अनुरक्षण

Preservation – परिरक्षण

Reservation – आरक्षण

Conservation – संरक्षण

इन चारों शब्दों में 'रक्षण' शब्द में चार उपसर्ग लगाकर चार शब्द बनाए गए हैं। इसी तरह समास पद्धति द्वारा भी शब्द बनाए जा सकते हैं; जैसे-

स्वत्वाधिकार – Copyright

विशेषाधिकार – Privilege

उपसर्ग और प्रत्यय लगाने से बने शब्द हैं-

प्राधिकार – Authority

प्राधिकरण – Authority

प्राधिकारी – Authorities

इसके अतिरिक्त शब्द-निर्माण के दूसरे तरीके भी हैं, जैसे विदेशी शब्दों को यथावत लिप्यंतरित करने के स्थान पर हिंदी ध्वनियों के अनुकूल बनाया जाए, जैसे-

Academy – अकादमी

Fantasy – फंतासी

Tragedy – त्रासदी

पारिभाषिक शब्दावली से सम्बद्ध कुछ अंग्रेजी उपसर्गों और प्रत्ययों के पर्यायों को भी दृष्टिगत करने की आवश्यकता है, जैसे-अंग्रेजी के Sub, Joint, Deputy, Vice, Assistant, General आदि के लिए निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग होता है-उप, संयुक्त, सहायक और महा आदि।

Deputy Director – उपनिदेशक

Sub Director – उप-निरीक्षक

Joint Secretary – संयुक्त सचिव

अनुवाद

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विकास के साथ ही अनेक प्रकार की नवीन संकल्पनाओं और स्थितियों का विकास हुआ है और होता रहेगा। उनकी अभिव्यक्ति हेतु नवीन शब्दावली का निर्माण तथा पुरानी का अर्थ-विस्तार होता है। इस विकास के लिए राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली को अनुवाद की आवश्यकता होती है। इस पद्धति में संकल्पना को व्यक्त करने वाले सम्पूर्ण शब्द समूह का अनुवाद किया जाता है, जैसे-

Acid Rain – अम्ल वर्षा

Cold War – शीत युद्ध

Workshop – कार्यशाला

किसी-किसी शब्द का अनुवाद करके तथा कुछ का यथावत लिप्यंतरण कर दिया जाता है-

Share Market – शेयर बाजार

Stockholder – स्टॉकधारक

(च) लिपि के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–लिपि के विकास की निम्नलिखित पाँच अवस्थाएँ हैं–

1. प्रतीक लिपि–अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए आदि मानव कई प्रतीकों का प्रयोग करता था। कुछ विद्वान इसे लिपि इसलिए नहीं मानते, क्योंकि इन प्रतीकों का संबंध भाषा से नहीं था। प्रतीक लिपि में सरलता से बोधगम्य वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है; जैसे–हमारे समाज में कार्ड पर हल्दी लगे होना किसी शुभ सूचना का संकेत होता है।

2. चित्रलिपि–चित्र को लेखन कला का सर्वप्रथम चरण माना जाता है। प्राचीन काल की कन्दराओं में बने चित्र इस तथ्य के उदाहरण हैं। चित्रलिपि का प्रयोग लगभग प्रत्येक देश में देखने को मिलता है। जैसे–मिस्र, स्पेन, मैसोपोटामिया, दक्षिण फ्रांस, उत्तरी अमेरिका आदि। चित्रलिपि भाषा के श्रव्य पक्ष से जुड़ी होती है। इसी कारण चित्रलिपि को भी लिपि के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

3. भावलिपि–भावलिपि को चित्रलिपि का विकसित रूप माना गया है। इसमें चित्रों के माध्यम से हृदय के भावों को अंकित किया जाता है। चित्रलिपि में चित्र वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं भाव लिपि में उन वस्तुओं से संबंधित भावों को व्यक्त किया जाता है।

मिस्र में इस लिपि के लिए कीलों का प्रयोग किया जाता है इसलिए इसको कीललिपि भी कहा जाता है; जैसे–

(क) अस्वीकृति प्रकट करने के लिए पीठ फेरना।

(ख) प्रेम के लिए आलिंगनबद्ध होना।

4. विचार लिपि–लिपि के इस रूप को सांकेतिक रूप से जोड़ा गया है। इसका विकास भाव लिपि से ही माना जाता है। इस प्रकार की लिपि में आकृतियों का विशेष स्थान होता है। लिपि में विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता संकेतों की प्रधानता होने से आ गयी है। अब लिखने का माध्यम चित्र के स्थान पर संकेत चिह्न हो गए हैं। किसी के चलने की क्रिया को दो रेखाओं के माध्यम से अंकित किया जाने लगा है। आज गणित में उपयोग होने वाले चिह्न घटा (–), गुणा (×), जमा (+) तथा भाग (÷) आदि विचार लिपि के उदाहरण हैं।

5. ध्वन्यात्मक लिपि–यह लिपि का अंतिम चरण माना जाता है। उपर्युक्त लिपियाँ सीमित भावों को अभिव्यक्त कर सकती थीं, लेकिन जैसे-जैसे मनुष्य विकास करता गया, ज्ञान का भी विकास होने लगा। ध्वन्यात्मक लिपि का आविष्कार उस समय हुआ, जब विस्तृत ज्ञान की अभिव्यक्ति के लिए इन लिपियों से वह अपनी बात संप्रेषित करने में कठिनाई अनुभव करने लगा। ध्वनि लिपि के दो भेद होते हैं–अक्षरात्मक लिपि और दूसरी वर्णनात्मक लिपि। अक्षरात्मक लिपि में प्रत्येक ध्वनि के लिए स्वतंत्र वर्ण होते हैं, लेकिन वर्णनात्मक लिपि का निर्माण भाषिक ध्वनियों के आधार पर हुआ है।

भाग 'ख'

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन पर प्रकाश डालिए:

(क) हिंदी की साहित्यक शैलियाँ

उत्तर–हिन्दी की साहित्यिक शैलियाँ

हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी

हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी एक ही भाषा के तीन रूप हैं। हिन्दुस्तानी का भाषा रूप हिन्दी और उर्दू को अपने अंदर समावेश करने की शक्ति रखता है। उच्च हिन्दी, उच्च उर्दू और हिन्दुस्तानी इनका प्रयोग एक साथ किया जाता है। हिन्दी साहित्य में रचनाकारों की रचना में इनका प्रयोग पृथक्ता लिए दिखाई देता है। जैसे कि प्रसाद की 'कामायनी', यशपाल की 'दिव्या' आदि उच्च हिन्दी में लिखी गई रचनाएँ हैं।

सआदत हसन मंटो की कहानियाँ, इस्मत चुगताई के उपन्यास उच्च उर्दू में लिखे गए हैं और मुंशी प्रेमचन्द के अधिकांश उपन्यास जैसे 'गबन' और 'निर्मला' आदि हिन्दुस्तानी शैली की श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। प्रेमचन्द के पश्चात राही मासूम रजा, श्रीलाल शुक्ल, अमृत लाल नागर आदि लेखकों ने हिन्दुस्तानी शैली में रचनाएँ की।

एक ही रचना में तीनों शैलियों का मिला-जुला प्रयोग हिन्दी साहित्य में देखा जा सकता है। उच्च हिन्दी शैलियों का प्रयोग विवरण देने, प्राकृतिक चित्र खींचने और पात्रों की मनोस्थिति का वर्णन करने में होता है। उच्च उर्दू शैली का प्रयोग मुस्लिम पात्रों के द्वारा किया जाता है और पात्रों के संवाद हिन्दुस्तानी में होते हैं। अब उच्च हिन्दी और उच्च उर्दू का स्थान हिस्दुस्तानी साहित्यिक अभिव्यक्ति ने ले लिया है। आज की हिन्दी में अरबी-फारसी के शब्दों का समावेश सामान्य बात हो गयी है। जैसे–खुशी-प्रसन्नता, साजिश-षडयंत्र, किताब-पुस्तक, धरती-जमीन आदि अरबी-फारसी के समस्त शब्द हिन्दुस्तानी शैली में पूर्णत: समाहित हो गए हैं। हिन्दी के प्रयोक्ता को इन शैलियों का विकल्पवत प्रयोग अधिक सक्षम बनाता है। जैसे–

उच्च हिन्दी		**उच्च उर्दू**
मेरे विरुद्ध	–	मेरे खिलाफ
के द्वारा	–	के मार्फत
झूठा आरोप	–	गलत इल्जाम

इन दोनों शैलियों के मिले-जुले प्रयोगों को हिन्दुस्तानी का नाम दिया गया है; जैसे–तरक्की होना असंभव है, अपराधी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

(घ) प्रत्यय

उत्तर–पहले प्रकार का व्युत्पादन 'अंत व्युत्पादन' तो दूसरे प्रकार का व्युत्पादन 'अन्त: व्युत्पादन' कहलाता है। प्रत्ययों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

प्रत्यय से तात्पर्य

प्रत्ययों को भाषा का सबसे छोटा और सार्थक खंड माना गया है। ये प्रत्यय जब मूल शब्द से जुड़ते हैं, तो इनका नवीनीकरण हो जाता है। इसे व्यापक शब्द के रूप में माना जाता है। इस प्रकार प्रत्यय को एक व्यापक शब्द बताया गया है, जिसके दौरान शब्द के आरंभ में लगने वाले प्रत्यय स्वत: ही आ जाते हैं; जैसे–

कुरूपता = कुरूप + ता, सज्जनता = सज्जन + ता, अविवेक = अ + विवेक

हिन्दी के प्रत्यय

हिन्दी में दो प्रकार के प्रत्यय हैं–रूप साधक, व्युत्पादक।

1. हिन्दी के रूप साधक प्रत्यय–संज्ञा और क्रिया के रूपों में रचना रूपसाधक प्रत्ययों के माध्यम से ही होती है। हिन्दी संज्ञाएं वचन, कारक के अनुसार ही अपना रूप परिवर्तित करती हैं; जैसे–

सामान्य एकवचन	**सामान्य बहुवचन**
माला	मालाएं
लड़की	लड़कियाँ
राजा	राजा
तिर्यक एकवचन	**तिर्यक बहुवचन**
माला	मालाओं
लड़की	लड़कियों
राजा	राजाओं

इस प्रकार की समस्त क्रियाएं काल, पक्ष व वृत्ति के अनुसार व कर्त्तानुसार लिंग, वचन व पुरुष के अनुसार रूप बदलती हैं; जैसे 'रहा' है, पक्षबोधक रूप साधक प्रत्यय है, जो पूर्ण रूप से काल, सातत्य बोधक पक्ष और निश्चयार्थक वृत्ति का बोध कराता है जैसे–

एकवचन	**बहुवचन**
मैं विद्यालय जा रही हूँ–	आप विद्यालय जा रही हैं।
मैं भोजन कर रहा हूँ –	वे भोजन कर रहे हैं।
मैं बाजार जाता हूँ –	हम बाजार जाते हैं।

2. हिन्दी के व्युत्पादक प्रत्यय–संस्कृत और विदेशी प्रत्ययों की सहायता से हिन्दी में काफी मात्रा में शब्दों का निर्माण किया जाता है; जैसे–

चाल	+ बाज	=	चालबाज
परीक्षा	+ क	=	परीक्षक
आवश्यक	+ ता	=	आवश्यकता

प्रत्ययों का सबसे ज्यादा प्रयोग शब्द निर्माण के समय होता है। स्रोत की दृष्टि से प्रत्यय निम्न प्रकार के होते हैं–

(i) संस्कृत प्रत्यय / तत्सम प्रत्यय

(ii) हिन्दी प्रत्यय / तद्भव प्रत्यय

(iii) अरबी–फारसी के प्रत्यय या विदेशी प्रत्यय

1. संस्कृत का मूल शब्द + संस्कृत का प्रत्यय

विज्ञान	+	इक	=	वैज्ञानिक
इतिहास	+	इक	=	ऐतिहासिक

2. संस्कृत का मूल शब्द + हिन्दी प्रत्यय

ज्ञान	+	ई	=	ज्ञानी

3. हिन्दी का मूल शब्द + हिन्दी प्रत्यय

कृपा	+	आलु	=	कृपालु

कड़वा + आहट = कड़वाहट

4. हिन्दीमूलक शब्द + अरबी-फारसी शब्द

चाल + बाज = चालबाज

शर्म + सार = शर्मसार

5. अरबी-फरसी के मूल शब्द + अरबी फारसी प्रत्यय

खजाना + ची = खजानची

मुकदमा + बाज = मुकदमेबाज

3. प्रकार्य की दृष्टि से प्रत्यय–प्रकार्य की दृष्टि से प्रत्ययों को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है–

1. व्युत्पादक प्रत्यय
2. रूप साधक प्रत्यय

(ड.) लोकोक्ति का आशय

उत्तर–लोकोक्ति शब्द से तात्पर्य

लोकोक्ति अर्थात लोगों में प्रचलित उक्ति। लोकोक्ति का अर्थ विस्तार संस्कृत में और इसका सीमित प्रयोग पंचतंत्र में प्राप्त होता है। लोकोक्ति एक अलंकार रूप में ही काव्यशास्त्र के आलंकारिक ग्रन्थों, जैसे-'कुवलयानंद' और 'भाषाभूषण' में भी प्रयुक्त हुई है। परन्तु सामान्य अर्थ में यह लोक की उक्ति ही है, जिसका पर्याय कहावत है।

लोकोक्ति को एक ऐसा कथन माना जाता है, जिसका रचयिता अज्ञात होता है। एक तमिल मान्यतानुसार-'विश्व का नाश संभव है, किन्तु लोकोक्तियों का नहीं।'

लोकोक्तियों के उपलब्ध पर्यायों में सर्वाधिक प्रचलित पर्याय कहावत ही है। किन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार कहावत को उन कुछ विशेष लोकोक्तियों के लिए प्रयोग करना चाहिए, जिनके मूल में कोई न कोई कथा व्याप्त है। यही कारण है कि कहावत को 'वृत्त' से निष्पन्न समझा जाता है, जैसे–'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' जैसी लोकोक्ति का मूल रूप कहावत है, क्योंकि इसके मूल में कोई कथा अवश्य निहित है। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार कहावत के मूल में कथा नहीं अपितु 'कहानी' का होना अपेक्षित है। जो कथन 'कहानी' में प्रचलित हो गया, उसे ही कहावत कहा जाता है। मतों में इस प्रकार की भिन्नता होने के पश्चात भी लोकोक्ति और कहावत एक-दूसरे के पर्याय ही माने जाएँगे। इनमें कुछ सूक्ष्म अंतर होने के पश्चात भी इनके मूल अर्थ में समानता होती है।

लोकोक्ति और परकोसरा–लोकोक्ति का अन्य प्रचलित पर्याय 'परकोसरा' है। मूलत: यह ब्रज प्रदेश के शब्द का अर्थ है-किसी सूत्र अथवा लोकोक्ति पर अन्त होने वाली शिक्षाप्रद लघु कथा, जैसे–'सूत न कपास, जुलाहों में लट्ठमट्ठा'।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर 150-150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(क) नासिक्य व्यंजन

उत्तर–नासिक्य ध्वनियाँ–वायु स्वर यंत्र पार करने के पश्चात दो भागों से बाहर निकलती है–*(i)* मुख विवर; *(ii)* नासिका विवर।

मौखिक ध्वनियाँ मुख विवर से बाहर निकलती हैं और मौखिक नासिक्य ध्वनियों में वायु मुख विवर से और कुछ नासिका विवर से निकलती है। शुद्ध नासिक्य ध्वनियाँ पूर्ण रूप से नासिका विवर से निकलती हैं।

अनुस्वार

व्यंजन स्वर के सहारे उच्चरित किए जाते हैं और स्वर स्वयं ही उच्चरित होते हैं। इसीलिए स्वरों का स्थान व्यंजन से पूर्व स्थापित किया गया है, लेकिन अनुस्वार की कोई स्वतंत्र गति नहीं होती। इसी कारण से इसे स्वर नहीं कहा जा सकता। इसका स्थान स्वर के पश्चात ही माना गया है। अनुस्वार का स्थान स्वर और व्यंजन के मध्य स्थापित किया किया गया है। जैसे–अंगीकार

अ + ं + ग अर्थात स्वर और व्यंजन के मध्य ही अनुस्वार का स्थान होता है। सामान्य रूप से ऊष्म व्यंजनों में अनुनासिकता लाने के लिए ही अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है; जैसे–पंक, रंक आदि।

अनुस्वार का प्रयोग–ङ, ञ, ण, न, म के स्थान पर बिन्दी लगाने की एक प्रथा बन गयी है, जिसके कारण काफी सुविधा हो गयी है।

अनुनासिकता

स्वर–अनुनासिक स्वर मात्र एक है अँ, जिसकी मात्रा है (ँ)। उदाहरण के लिए–आँसू, दाँत, अँगूठी, चाँद।

स्पर्श व्यंजन ध्वनियाँ

हिन्दी में पाँच-पाँच स्पर्श व्यंजनों को पाँच वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक वर्ग का अंतिम व्यंजन अनुनासिक कहलाता है।

***(i)* कोमल तालव्य व्यंजन**–क, ख, ग, घ, ङ–अङ, क, पङख, गङगा, कङघी।

अब ङ के स्थान पर बिंदी का प्रयोग किया जाने लगा है; जैसे–अंक, पंख, गंगा, कंघी। किन्तु कुछ शब्दों में इसका प्रयोग पहले की तरह ही किया जाता है; जैसे–पराङमुख, वाङमय।

***(ii)* वत्सर्य तालव्य व्यंजन**–च, छ, ज, झ, ञ–पञ्च, पञ्छी, रञ्ज।

इन्हें अब बिन्दी लगाकर लिखते हैं–पंच, पंछी, रंज, मंजा।

***(iii)* मूर्धन्य व्यंजन**–ट, ठ, ड, ढ, ण–घण्टा, झण्डा, पण्डित।

बिन्दी लगाकर ये शब्द इस प्रकार बनते हैं–संसार, घंटा, झंडा, पंडित।

***(iv)*. दंत व्यंजन**–त, थ, द, ध, न–जन्तु, अन्धा, धन्धा, मन्दा।

इन्हें बिन्दी लगाकर इस प्रकार उच्चरित किया जाता है–जंतु, अंधा, धंधा, मंदा।

***(v)* ओष्ठ्य व्यंजन**–प, फ, ब, भ, म – पम्प, दम्भ, लम्ब।

बिन्दी लगाकर ये शब्द इस प्रकार से बनते हैं – पंप, दंभ, लंब।

म का महाप्राण म्ह भी है, जिसे शब्दों में निम्न प्रकार से प्रयुक्त किया जाता है–तुम्हारा, कुम्हार।

(ख) विपरीतार्थक शब्द?

उत्तर–जो शब्द किसी शब्द के प्रचलित अर्थ के विपरीत अर्थ को प्रकट करने वाले होते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। विलोम का सही अर्थ विपरीत माना गया है। जैसे **दिन** का विपरीत शब्द **रात, सुख** का विपरीत शब्द **दुःख**, **मित्र** का विपरीत शब्द **शत्रु**।

किसी भी शब्द के विपरीतार्थक शब्द को सही और गलत निम्नलिखित आधारों पर माना जा सकता है–

***(i)* विषम/असमान संदर्भ**–भाषा के एक-दूसरे से विपरीत संदर्भों में प्रयोग होने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहा जाता है। जैसे–'सुबह होने पर रात का अँधेरा दिन के उजाले में बदल जाता है।'

इस वाक्य में रात और दिन को भौतिक जगत के असमान संदर्भ के रूप में देख सकते हैं, इसलिए ये शब्द भी विपरीतार्थक हैं।

***(ii)* विषम संरचना**–विरोध करने वाले तत्त्वों, अनु, कु, अ, अन आदि के योग से बने शब्द विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे–अन्याय, न्याय का विपरीतार्थक है।

***(iii)* परस्पर विरोधी अर्थ प्रकट करने वाले घटकों से युक्त शब्द**–जैसे-नर, नारी।

नर शब्द के अर्थीय तत्त्व हैं–(मानव + वयस्क + पुरुष)

युवती शब्द के अर्थीय तत्त्व हैं (मानव + वयस्क + स्त्री)

हिन्दी की शब्दावली में सभी प्रकार के शब्द विश्लेषण के विपरीतार्थक शब्द उपस्थित हैं। इस विलोमता को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है–

ऊँचा – नीचा
स्वर्ग – नरक
भाग्य – दुर्भाग्य
सुख – दुःख
आकाश – पाताल आदि।

(ग) बलाघात

उत्तर–जब स्वर का उच्चारण बल देकर किया जाता है, तो उसे आघात (Accent) कहते हैं। इसको भाषा विज्ञान की दृष्टि से स्वराघात और बलाघात भी कहते हैं। आघात की तीन स्थितियाँ मानी गयी हैं–

1. बलात्मक स्वराघात–इसका उच्चारण किसी ध्वनि पर बल देकर किया जाता है। जैसे–अभि + मा + न। यह बलात्मक स्वराघात के कारण अशुद्ध उच्चारण है, जबकि अभि + मान इसका शुद्ध उच्चारण है।

2. संगीतात्मक स्वराघात–कविता और वाक्य में ध्वनिगत उतार-चढ़ाव होता है, जिसे संगीतात्मक स्वराघात का नाम दिया जाता है। जैसे–'क्या तुम मंदिर जाओगे?' इसके अंतर्गत जाओगे का उच्चारण उच्च स्वर में होगा।

3. रूपात्मक स्वराघात–जितने भी व्यक्ति होते हैं, उन सभी के कंठ स्वर भिन्न-भिन्न होते हैं। कंठ की ध्वनि से ही व्यक्तियों की पहचान की जाती हैं। इसका संबंध भाषा से न होकर उच्चारण से होता है। कंठ ध्वनि के माध्यम से हम अंधकार में भी व्यक्ति की पहचान सहजता से कर लेते हैं।

(ड.) वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग

उत्तर–वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना अक्तूबर, 1961 में डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में हुई थी। सन 1950 में सरकार ने वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड की स्थापना की और उसे पूरे देश के लिए समान शब्दावली निर्माण का कार्य सौंपा।

अप्रैल, 1950 में जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेश के अनुसार शिक्षा मंत्रालय ने अक्तूबर, 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग की स्थापना की।

शब्दावली आयोग ने शिक्षा मंत्रालय, केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा अन्य संस्थाओं द्वारा तब तक तैयार की गई शब्दावलियों का पुनरीक्षण और समन्वय करने के लिए विविध विषयों की विशेषज्ञ सलाहकार समितियां बनाईं। इनमें भारत के सभी भाषाई क्षेत्रों के प्रमुख विद्वान, अध्यापक और भाषाविद थे।

विधि शब्दावली को तैयार करने का दायित्व राजभाषा विधायी खंड को सौंपा गया था। विधि शब्दावली के अतिरिक्त शेष सभी विषयों की प्रामाणिक शब्दावली विकसित करने की प्राधिकृत केंद्रीय संस्था वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ही है।

विभिन्न भारतीय भाषाओं को परस्पर निकट लाने की दृष्टि से आयोग त्रिभाषा कोशों (अंग्रेजी, हिंदी तथा अन्य एक भारतीय भाषा) का भी निर्माण करता है। अनेक नव-विकसित तथा विशिष्ट ज्ञान क्षेत्रों की शब्दावली निर्माण के साथ-साथ प्रतिपुष्टि के आधार पर संशोधन और पुनरीक्षण का दायित्व भी आयोग वहन करता है।

कम्प्यूटरीकरण–पारिभाषिक शब्दावली का एक विशाल डाटा बेस कम्प्यूटर के माध्यम से तैयार करने का कार्य आयोग ने शुरू किया है। लगभग 5 लाख शब्दों को डाटा बेस में भरकर विभिन्न विषयों संबंधी शब्द संग्रह तथा समेकित शब्दावलियां निर्मित हो सकेंगी। हिंदीतर भाषाओं के पर्यायों को डाटा बेस में भरकर कम्प्यूटर आधारित शब्दावली बैंक तैयार किया जा सकता है।

(च) अ-लोप

उत्तर–अ स्वर की कोई भी मात्रा नहीं होती, जैसे–पवन–प् + अ + व् + अ + न् + अ इसमें अ का लोप किया गया है। कभी-कभी कुछ इस प्रकार के शब्द होते हैं, जिनका उच्चारण लिखावट से भिन्न होता है। कहने का तात्पर्य है कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनमें अ का लोप दिखाई देता है, लेकिन लिखने में अ स्पष्ट दिखाई देता है। इस प्रकार से अ का लोप आरम्भ और मध्य किसी भी रूप में हो सकता है।

1. शब्दांत में 'अ' लोप–शब्द के अन्त में हमेशा ही स्वर 'अ' का लोप होता दिखाई देता है। 'अ' रहित व्यंजन का उच्चारण तो करते हैं, लेकिन जिस समय शब्द लिखा जाता है, उस समय स्वर 'अ' का चिह्न नहीं लगाया जाता, क्योंकि लेखन व्यवस्था परम्परागत रूप का ही पूर्ण रूप से अनुसरण करती है। कुछ लिखित और उच्चरित रूप होते हैं, जिनके रूप में स्वर 'अ' का लोप दिखाई देता है; जैसे–

लिखित रूप	**उच्चरित रूप**
पाँच	पाँच्
चार	चार्
कल	कल्
पेड़	पेड़्

2. शब्द के मध्य में अ लोप–हिन्दी में शब्द मध्य में भी उच्चारण स्तर पर अ-स्वर का लोप दृष्टिगोचर होता है, इसलिए अ लोप के दो नियम हैं–

नियम–जिस प्रकार 'लड़का' शब्द में उच्चारण करते समय ड़ के पश्चात आने वाला शब्द उच्चारण में लुप्त हो जाता है, उसी प्रकार से और शब्दों में भी 'अ' का लोप दिखाई देता है, जैसे–

लिखित रूप	**उच्चरित रूप**
लकड़ी	लक्ड़ी
सरसों	सर्सों
जनता	जन्ता
गिनती	गिन्ती

इस प्रकार इन सभी शब्दों में लुप्त होने वाले 'अ' के पूर्व एक व्यंजन तथा एक स्वर अवश्य आया है और उसके पश्चात एक व्यंजन और दीर्घ स्वर आ रहा है।

नियम–इसमें नीचे लिखे गये लिखित और उच्चरित रूपों को ध्यान से देखें–

लिखित रूप	**उच्चरित रूप**
सिमटन	सिम्टन्
अनशन	अन्शन्
अनबन	अन्बन्

'अनबन' और 'सिमटन' शब्दों के उच्चारण में अन्तिम 'अ' लोप के साथ ही एक 'अ' का लोप हो रहा है। इन सभी व्यंजनों में ह्रस्व स्वर क्रमानुसार आ रहे हैं। नियम के अनुसार व्यंजन और दीर्घ स्वर आने चाहिए।

इसके अलावा एक सूत्र यह भी कहता है कि यदि किसी शब्द में तीन या तीन से अधिक ह्रस्व स्वर क्रमानुसार आते हैं, तो बायीं ओर से दूसरे अ-स्वर का पूर्ण रूप से लोप कर दिया जाता है; जैसे–सिमटन, अनबन।

इस प्रकार से जो भी ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, वे दो भागों में विभक्त की जाती हैं–

1. निरर्थक ध्वनियाँ
2. सार्थक ध्वनियाँ

स्वर और व्यंजनों में सार्थक ध्वनियों को विभाजित किया गया है। इसकी एक सीमा होती है, जिसे स्वररेखा कहते हैं। स्वरों का विभाजन जिह्वा के अनुसार किया जाता है। मुख्य स्वर छह होते हैं। वैसे 'अ' की मात्रा की अपनी कोई पहचान नहीं होती, लेकिन व्यंजनों का उच्चारण 'अ' के अभाव में अधूरा रहता है। किसी भी स्वर का उच्चारण जोर से किया जाता है या जोर लगाकर किया जाता है, तो उसे **आघात** कहा जाता है। कभी-कभी 'अ' का लोप दिखाई देता है और यह लोप मध्य और अन्त कहीं पर भी दिखाई दे सकता है।

प्रश्न 4. प्रोक्ति से आप क्या समझते/समझती हैं? इसके अभिलक्षणों का परिचय दीजिए।

उत्तर–भाषा के अंतर्गत वाक्य सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई मानी जाती है। बहुत-से विद्वानों ने वाक्य को भाषिक संरचना की सबसे बड़ी इकाई स्वीकार किया है। भाषा के माध्यम से अपने विचारों को सहजता से प्रकट कर सकते हैं। अर्थात कही गई बात को संप्रेषित करना भाषा के माध्यम से ही संभव हो पाता है। अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाने के लिये श्रोता का सामने होना आवश्यक होता है, ताकि जो भी बात वक्ता के माध्यम से कही जा रही है, श्रोता उसे समझकर उसका उत्तर दे सके। इसी कारण से दो लोगों के परस्पर सम्प्रेषण की इस इकाई को प्रोक्ति कहा जाता है।

प्रोक्ति की संकल्पना

संदर्भ का महत्त्व

भाषा का मुख्य कार्य सिर्फ शब्दों या वाक्यों को बोलने से ही नहीं, वरन बातचीत के द्वारा सार्थक अभिव्यक्ति देना होता है। वक्ता का संदेश संदर्भ द्वारा ज्यादा स्पष्ट होता है, जो बातचीत के लिए अत्यधिक आवश्यक है। अर्थात वक्ता के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करना और श्रोता द्वारा उसका उचित अर्थ समझकर उसका उत्तर देना ही भाषा का आधार है। जैसे–

– कौन किससे बोल रहा है?
– किस समय बोल रहा है?
– कहाँ बोल रहा है?
– किस कारण बोल रहा है?

उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य को देखें–

'आठ बज गए हैं।'

इस वाक्य का अर्थ समय की जानकारी प्रदान करना है और यदि इसको संदर्भ में देखें, तो इसका अर्थ पूर्णरूप से पृथक हो जाता है। जैसे–

(सुनीता किसी कार्य में व्यस्त है)

सुनीता : सुनिए, आठ बज गए हैं।

रमन : बस, अभी चलते हैं।

इस वाक्य में सुनीता वास्तव में यह कहना चाहती है कि देर हो रही है। कहने का तात्पर्य है कि वह यह संदेश अपने रमन को दे रही है और रमन के द्वारा भी उचित जबाव दिया गया है। यही वाक्य अन्य संभावित प्रयुत्तर में भी हो सकता है जैसे–

सुनीता : सुनिए, सात बज गए हैं।

रमन (1) तो मैं क्या करूं? (वास्तविक अर्थ ग्रहण न करने पर)

(2) यह घड़ी खराब है। (अभी देर नहीं हुई)

(3) ठीक है। (बस अभी चलते हैं)

इस प्रकार उपर्युक्त वाक्यों में कथन शैली का ही अन्तर सामने आता है। जब तक वक्ता व श्रोता का संवाद स्पष्ट नहीं होता अर्थात समझने में हेर-फेर होता है, तो समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसलिए श्रोता और वक्ता दोनों के लिए उचित शब्दों का प्रयोग करते हुये उचित वाक्य बोलने चाहिए। इससे किसी को भी अटपटे और अस्वाभाविक उत्तर प्राप्त नहीं होंगे।

मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति

हमेशा विचारों का आदान-प्रदान लिखकर और बोलकर किया जाता है। लिखकर संदेश देते समय भाषेतर इकाइयों का कोई महत्त्व नहीं होता, जबकि बोलते समय शारीरिक चेष्टाएँ भाषा के साथ जुड़ जाती हैं। उस हावभाव को लिपिबद्ध करना भी आवश्यक होता है। निम्नलिखित उदाहरण से मौखिक और लिखित स्तर की भिन्नता स्पष्ट होती हैं–

मौखिक वार्तालाप

अध्यापक : तुमने पाठ पढ़ लिया?

(छात्र द्वारा सिर हिलाना)

अध्यापक : यह किसके बारे में है?

जी, रविन्द्रनाथ टैगोर।

(अध्यापक द्वारा हाथ से बैठने का इशारा करना)

लिखित वार्तालाप

अध्यापक : तुमने पाठ पढ़ लिया?

छात्र : जी, पढ़ लिया।

अध्यापक : यह किसके बारे में है?

छात्र : जी, रविन्द्रनाथ टैगोर।

अध्यापक : ठीक है, बैठ जाओ।

इस आधार पर यह स्पष्ट है कि संदेश का रूप चाहे लिखित हो या मौखिक, इसका अपना एक कोड होता है, एक शैली होती है। सामान्य रूप से वार्तालाप करते समय हम पूरे वाक्यों का प्रयोग नहीं करते, क्योंकि वाक्य आपस में जुड़े रहते हैं। कुछ अंश ऐसे भी होते हैं, जो बातचीत करते समय अनुमान के आधार पर छोड़ दिए जाते हैं। जैसे–

(1) : वर्मा जी, आप कल आए नहीं?

(2) : जी, मैं दिल्ली चला गया था।

(1) : क्यों?

(2) : कुछ काम था।

(1) : अच्छा!

यहाँ तीसरे वाक्य का 'क्यों' वास्तव में आप दिल्ली क्यों गए थे 'का' अर्थ व्यक्त कर रहा है। इसी प्रकार से कुछ काम था। 'मैं' 'मुझे' को वाक्य के प्रारम्भ में अनुमानित किया जा सकता है।

इससे पृथक सामान्य कथन में शैली पूर्णत: बदल जाती है। अत: सभी वाक्यों में स्वयं में पूर्ण होना अति आवश्यक है। जैसे–

1. मैं आज रात देर से सोऊँगा।
2. मैं रात को खाना नहीं खाऊँगा।
3. मैं रात को पढ़ाई नहीं करूँगा।

इन वाक्यों को इस प्रकार से नहीं कहा जा सकता–

1. देर से।

2. नहीं खाऊँगा।

3. नहीं करूँगा।

इनके आधार पर वाक्यों का कोई अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

इस प्रकार प्रोक्ति में संवाद की स्थिति बनी रहती है, क्योंकि इसका संबंध भाषा व्यवहार से होता है।

प्रोक्ति के प्रमुख अभिलक्षण

प्रोक्ति के संदर्भ में निम्नलिखित तथ्यों को जानना आवश्यक है–

1. विचारों को विभिन्न रूपों में तथा तर्कसंगत ढंग से प्रोक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सकता है।
2. सभी वाक्यों का आपस में संबंध होना आवश्यक है।
3. वाक्य शब्दों के समूह से बनते हैं और प्रोक्ति वाक्यों के समूह से बनती है।
4. प्रोक्ति की संरचना का आधार संलाप को माना गया है। इसी कारण संलाप को प्रोक्ति की सार्थक इकाई माना जाता है।
5. प्रकार्यों के माध्यम से ही प्रोक्ति का स्वरूप निर्धारित होता है न कि उनके आकार से। अर्थात प्रोक्ति अपने आप में पूर्ण रूप लिए हुए होती है।
6. निरर्थक वाक्यों का प्रोक्ति में कोई स्थान नहीं होता।
7. प्रोक्ति संप्रेषण की इकाई होने के कारण संदेश को श्रोता की प्रतिक्रिया को वक्ता तक पहुँचाती है।

■■